

॥ पशु मते भंदा भया ॥ हे राम नारायण हे वासुदेव हे गोविन्द हे श्री कृष्ण हे अनन्त नर
सिंह हे विष्णु ये संसार का कारण जीवरगर ॥ १५ ॥ सात्यकि हूँ ते भगवन् ॥ परमेश्वर
रूप महिमा अपहाद्यता श्री कृष्ण दा मोदर अच्युत का चरण की भजनाकार ॥

॥ १५ ॥

॥ पशु मते भया ॥ श्री राम नारायण वासुदेव गोविन्द वैकुण्ठ कुरुक्षेत्र ॥ श्री के शवानन
नर सिंह विष्णो मोक्ष संसार भुजग दुक्ता ॥ १५ ॥ सात्यकि हूँ ते भगवन् ॥ अपुनेय हरे विष्णो कृष्ण
दा मोदर अच्युत गोविन्द अनन्त सर्वेश वासुदेव नाना नमस्तु ते ॥ १६ ॥ उच्यते उवाच ॥ वासुदेव
पति त्वज्यो यो नन्देव मुपासते ॥ तद्वितो न फलिति रे कुर्ये स्व नति दुर्मति ॥ १७ ॥

॥ १६ ॥ उच्यते भंदा भया ॥ कोहि मनुष्य श्री कृष्ण कनकादि अहं देवता को ले वा नद
स्व मनुष्य हो गंगा कोति रमा वसिष्ठ पुरुषाई कृपको पानि पाया जस्ता ॥ १७ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

५

॥ धै मले भंदा भया ॥ घानिका स मय मा वस्या मा मात मा वर मा भयो दिन प्रति त मे ॥
रग या को छ ॥ १८ ॥ संजय ले भंदा भया ॥ कोहि पुष्य दुषि आ ल से विषीत दुष प च ॥
न दिन प्रति फरि को नाम सी या दुख सो करे ग ना स भै सुषि हो सा ॥ ॥

॥ धै मा उवाच ॥ अ पा स मी पे श य ना स न स्ये दि वा च रा त्रौ च य था धि ग सा म ॥
ची त्वा कृतं कृतं म या ज ना र्द न स्ते न कृते न तु व्य तु ॥ १८ ॥ संजय उवाच ॥ आ
थि लो भ भी ता पो रे पु च व्या धि पु ब न्त मा ना ॥ से कि न ना रा य णा द्वा र मा
रा सु धि नो भ वं ति ॥ १९ ॥ अ कुर उवाच ॥ अ हि ना रा य णा दा स दा स से दा स
ये भ्य इ सो ज ग तो न रा णं त स्मा द ह ध न्य त रो त्स लो के ॥ २० ॥

॥ १९ ॥ अ कुर ले भंदा भया ॥ हे श्री नारायण त मा चरण का दा स को दा स म जे न ल ॥ १९ ॥
व क्त नु ह व स ॥ ध रे मे रो भा गे त पा त्रि का चरण का दा स न वा था हे लो क ना धि ॥ २० ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥विदुहलेवितिग-या॥हेविष्णुभक्तकावत्समारुह-या श्रीकृष्णतमाचरणकोद-
समऊ हैप्रभुभनिविग-या॥जनमजरामायानितपाइकोदासमऊ॥२१॥भीषतवा-
ग-या॥हेभगवान् श्रीकृष्णजोविपरितकासमाभाईव-भुरेपिदुयाकासमययाति

॥विदुरउवाच॥वासुदेवस्य ये भक्ताः शान्तास्तद्वत्मानसा ॥ते षोडशस्यदासा-
न्मनि॥२१॥भीषउवाच॥विपरीतेषुका लेषुरिक्षीणेषु व-भुषु॥आदि-
स्वशरणगतवत्सल॥२२॥दोराचायाउवाच॥येयेहताम्य-अधरेण
नाथैर्न जनार्दनैर्न॥तेतेगताविष्णुपुरिप्रयोताको श्रीपिदेवस्यवरेण

माचरणमात्ररक्षागर्तुचाहिं दुहेपरम्यत्वरभानिवितिग-या॥२२॥प्र-
लेभंदाभया॥गोपिनाग-याकोदैत्यविष्णुसेमा-याउपनिशोर्गवासमयो-
विष्णुका जोधलेमा-यापानवरदानदियाको जल्लोभयोभनि यत्ता परम्य-
हृदयकोचरणमाचारंवारंनमस्कार॥२३॥ " " "

॥ कृपा चार्थ ले वितिग-या ॥ हे मधु कैटभारे परम स्वरभनि वितिग-या जा हा हा प्रो जन्म
ला वा हा वा हात मा चरणा वन्द ले कृपा रा सु हो ला यति आता मा हो भनि श्री कृष्ण ये
वितिग-या ॥ २१ ॥ अत्यथा ले वितिग-या ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ कृपा चार्थ उवाच ॥ मनु-मनी कलमिदं मधु कैटभारे मत प्रथमौ कमदुदनुग्रह
व ॥ त्वदुत्पत्त्यपरिचारक भूत भूत भूत भूत इमांस्मर लोकनाथ ॥ २२ ॥ भू भू
त्वा मे वाच ॥ गोविन्द के शवज नार्दन वासुदेव वि श्वेश वि श्व मधु सुदन वि श्व रूपे ॥
श्री पदम नाभ पुरुषोत्तम पुष्करक्ष ना रायणा च्युत नृसिंह नमो नमस्ते ॥ २३ ॥ क र्ण
उवाच ॥ नान्यं वदामि न भू शो मि न चिंतयामि नान्यं स्मरामि न भजामि न च शान्ति
॥ आत्मा त्वदीय वरणा सुजमादरेण श्री श्री निवास पुरुषोत्तम देहि दास्यस्व ॥ २४ ॥

हे गोविन्द के शवज नार्दन वासुदेव मधु सुदन वि श्व रूपे पद्मनेत्र ना रायणा भू भू
सिंह वा रे वारं तया इका चरणा मानमस्कार मेरो उधार गनु चाहि छ ॥ २५ ॥ क र्ण ले तया
या ॥ हे पुरुषोत्तम विष्णु म सा रित पाई का चरणा वन्द को से वा गनु मेरो उधार गनु है ॥ २६ ॥

धृतराष्ट्र लेखितं गन्धा ॥ पुनर्मरकारं गन्धा कापुभा ले वा वनरूप मे नारायणं त्रिभिः ॥
रूपधरमुनि शारङ्गदायदमचक्रधारणं गन्धा ॥ रस्तापुह्वो नमो वारं वारं ॥
॥ गन्धा लेखितं गन्धा ॥ हे पुभुदेवदेव मेरोसर्वैकमेतपाई हो ॥ पिता माता भाई व ॥
॥ विद्या इव सर्वैकमेतपाई हो मक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ नमो नमः कारणवास नारायणायामितद्विक्रमाय श्रीशारङ्गदाय ॥
सिगदाधराय नमोस्तुतस्मे पुह्वो नमो ॥ २७ ॥ गन्धा पु उवाच ॥ त्वमेवमाहुः ॥
त्वमेव वन्धुश्च सखी त्वमेव त्वमेव वन्धुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेवीयाद्वि त्वमेव ॥
त्वमेव सर्वममदेवदेव ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नद्या कृपा गरि उधारगर्ज ह वस् हे परमेस्वर नारायण तपाई का चरणानाम् ॥
मरकार ॥ २९ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ सोमदत्तलेखिति गद्दी भया ॥ हे परमेश्वर परमकल्याण विश्वभावन वासुदेव सा नर
पिता का स्वामितया भि हो. एता तथा श्री कनकोटि कोटिनमस्कार ॥ ३२ ॥ विद्वत्
लेखिति गद्दी ॥ हे ब्रह्मसाका भक्त देवता को ब्रह्मसाका ससारको हिन श्री क

॥ सोमदत्त उवाच ॥ नमः परमकल्याण नमस्ते विश्वभावन ॥ वासुदेवा ॥ ३३ ॥
यदुनापतय नमः ॥ ३३ ॥ इत्युवाच ॥ अतस्ती पुष्यसंकाशं पीतवासरं
येनमस्येति गोविन्द न तेषां विद्यते ये भयम् ॥ ३३ ॥ विराट् उवाच ॥ नमो ब्रह्म
वाय गो ब्रह्मसाहिता यव ॥ जगद्विताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ३४ ॥

गोविन्द त आचरणमा नमस्कार ॥ ३३ ॥ इत्येते विद्वत् गद्दी ॥ तपार्द्रकवायु
रूपपिता वरधौति पैरि रुमा अच्युत तथा इकाचरणमा कोटि कोटि
॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ वलभदुले भंदा भया ॥ हे श्री कृष्ण कुरु नाम यद्ये सदा ॥ ३५ ॥
मनुष्य कन गतिदिन्या ॥ ३५ ॥ श्री कृष्ण जी आग्या गदी भया ॥ ३५ ॥
स भानि दिन प्रति स्मरण नाम स्त्री न्या कन ॥ ॥ ॥

॥ वलभदु उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण लोत्तम गति नो गति भव ॥ स
प्रतिदुष्टो नम ॥ ३५ ॥ कृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कृष्णेति यो आस्यते ॥
त्वा यथा पद्म नरका दुष्टा म्यहम् ॥ ३६ ॥ सत्यं वीमि मनुज ॥
मुकुन्द नरसिंह जना दनेति ॥ जी वो जय त्वनुदिनं सरणो रणो वा ॥
शा यददा म्यभिष्टम् ॥ ३७ ॥ ॥ ॥

॥ जसो गति पानि वा जप पत्राजि क हत लो गति नर्क वा तदि ॥ क वै कुंठ वा स
॥ ३६ ॥ पुन कृष्ण आग्या गदी भया ॥ हे लोक हो जसो मेरे नाम मुकुन्द नरसिंह
ना दन भानि ध्या न गली तरक सत्य से वै कुंठ वास मि तला ॥ ३७ ॥

॥ ईश्वर आग्या मदी भया ॥ जशे नारायन को नाम दिन प्रति जप न्या सा ईश्वर
को दरसन पाया ॥ ऐर गंगा दित र्थ अस्मान ते ते स्फोटि देवता को पुजा गहि ईश्वर
पाया ॥ चाहि पनि श्री कृष्ण को ध्यावे चाग यावरो पुन्य पुन्य ॥ ३९ ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥ सकृन् नारायणे तु क्त्वा पुमांश्च यदा तत्र बभूवुः ॥ तत्रैव
थे पुष्पा लो भवति पुत्रका ॥ ३८ ॥ सुत उवाच ॥ तत्रैव गंगाय मुनि
सिन्धु सरस्वति च ॥ सर्वाणि तीर्था निवसेति तत्र यत्रा च्युतो दार ॥ ३९ ॥
॥ यम उवाच ॥ न के पश्चा मानस्तु यमेन परि भाषिते ॥ कीं च जानामहे ॥
शिवः केश नाशन ॥ ४० ॥ " " " " " "

॥ ३८ ॥ सुत ले भंदा भया ॥ जात हरिकथा वाचिरहं हृन् तात गंगा जमुना सरस्वति
सवेति र्थ तात आई सुनिरहं हृन् तव द्यान कपयि च भुमि ॥ ३९ ॥
तत्क नर्क वा ततो सा ॥ ४० ॥ यम ले भंदा भया ॥ जशे हरिकथा वाचिरहं हृन्
तस्को नर्क वा तज्जोर हो सा वैकुण्ठ वा स पाउछ ॥ ४० ॥

॥ नारद उवाच ॥ को हि मनुष्य लेख्य भक्तिगच्छ यापित्वा ईश भगतिं ॥ न सुखं
पनि धनं तु त्याजना कन ईक्षा गच्छ धन लेध मे ऊदै न ह्यस भक्ति ॥ २० ॥
हो तस्मात् जन्म विद्या वज्र तैलुषि ऊच्छ ह्यस भक्ति शास्त्र जा ॥ २१ ॥

॥ नारद उवाच ॥ जन्मान्तरसहस्रस्ते न तपो ध्यानसमाधिना ॥ नाराणां क्षीया यानां
ह्यस्य भक्तिः पुजायते ॥ २२ ॥ प्रह्लाद उवाच ॥ नाथ यो नित्यं हस्तेषु येषु ये पुजाय
हम् ॥ तेषु तेषु च त्या भक्तिरच्युता सुखदा त्वहि ॥ २३ ॥ या प्रीतिरविचेकानां विषये
ये न शान्तिनिवासे नुस्मरतः सामे हृदया न्यायस्य परं तु ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ प्रह्लाद मंदा भया ॥ हे प्रभु श्री ह्यस भने क ह्यारज मनां ह्य न तया ईको
भक्ति ग र्त्त स व्या गरि दया पु स न ह्य व स ॥ पु न वार ॥ हे वर स ॥ श्री भ ग याने
तया ईको चरण मा दै ले निश्च भक्ति ग र्त्त दया ज्ञा व स ॥ २६ ॥

॥ विश्वामित्र भंदाभया ॥ जस्मनुष्यलेदिन प्रतिजगतगुरु श्री नारायण को ध्यान नगर्नस न्याकरण
तिर्थ ह्या जत भन्दा श्री कृष्ण को ध्यान नग-यावडो पु न्यद्वन् ॥ ४४ ॥ जमदाग्न लेम भया ॥ जस्म
नुष्यले हरि को नाम मंगल गावद्ध तरका हृदयमा श्री कृष्ण ले वास गद्ध नरका घर मा सधे

॥ विश्वामित्र उवाच ॥ किं तस्य दानैः किं तीर्थैः किं तपोभिः मिमधरैः ॥ यो नित्यं व्यायते देवना
रायणं मनःस्थितम् ॥ ४५ ॥ जमदाग्न उवाच ॥ नित्योत्सवः सदा ते वीर्यवान् ॥ नित्यं नित्यं मंगलं
॥ येषां हृदि स्थो भगवान् मंगलायते नो हरिः ॥ ४६ ॥ भारद्वाज उवाच ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां क
तस्तेषां परजयः ॥ येषां मिन्दी वरणा मो हृदयस्थो जनार्दन ॥ ४७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भारद्वाज श्री लक्ष्मी वृद्धि ऊं ह न सदा मंगल होला ॥ ४५ ॥ भारद्वाज उवाच ॥ नित्योत्सवः सदा ते वीर्यवान् ॥ नित्यं नित्यं मंगलं
हृदयमा फल फल जस्तो निर्मल ह तरका हृदयमा श्री कृष्ण वसद्ध नरका घर मा सधे ॥ ४६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ गौतम लेखितं ग-या ॥ कोटि गौदान ग-या को ग्रह नमा कासि स्नान ग-या को संकर मी पुया ग-
या को र मेरु पर्वत समान जज्ञ ग-या को हिरण्य दान ग-या को सति जति पुण्य द- त्यो सबै पात स-
मय मा गोविन्द जप्ता को बरो पु-न्य द ॥ " " " " " "

॥ गौतम उवाच ॥ गौ कोटि दानं ग्रहणे पुकाशी पुया ग गङ्गा पुत कल्याणी ॥ ए जायुं ते मेरु
सुर्वर्ग दानं गोविन्द नाम स्मरणे न तु स्य म ॥ ४७ ॥ अंगिर उवाच ॥ गोविन्देति सदा स्नानं गो-
विन्देति सदा जप ॥ गोविन्देति सदैव ध्यानं सदा गोविन्द कीर्तनं नम ॥ ४८ ॥ अक्षरं हि पुरं ब्र-
ह्म गोविन्देत्यक्षयं य म ॥ तस्मा दुच्चतं येन ब्रह्म भूयाय स्यते ॥ ४९ ॥ " " " "

॥ ४७ ॥ अंगिर उ लेखितं ग-या ॥ स्मरणं ग-या पानि- स्नानं गद्दी मापनि गोविन्द जप नु ध्यान-
पानि गोविन्द जप नु सदा सर्वदा गोविन्द जप नु सकांठे रै पुं-न्य द ॥ ४८ ॥ पुनर्वा ॥ कसे लेख-
नि स्मरणं पिक रा उ से ले मोक्षं कं द- गोविन्द का विष्णु पा दुख ना स कं द- परलोक उधार हो-
ला पि वि वै कंठ जा द- आ फु क रा सा र्ग वा स हो ला ॥ ४९ ॥ " " " "

॥ वादराय न ले भंदा भया ॥ हे भव्यत कल्यवृक्ष भवनत कामधेय न ॥ चिन्ता सणि गोविन्द हे
हरे तुमो नाम विन्या कन विषय का लमा अच्यत भयापनि सुचत होला एता परम्य स्वर को
वारं वारं नमस्कार ॥ ५० ॥ हरि ह ले भंदा भया ॥ हे विरूप देव देवी क का पुत्र नन्द कि को उवा

॥ वादराय रा उवाच ॥ भव्यतः कल्यवृक्षो लावनतः कामधेय न ॥ चिन्ता मणि गोविन्द हे
हरे नाम विचिन्तयत ॥ ५० ॥ हरि ह वो वाच ॥ जयतु जयतु देवो देव की नन्द से ये जय य
तु रुद्रो वृक्षि वंशे पुदीय ॥ जयतु जयतु मे पश्या मत् को मं ला गो जयतु जयतु देवी भा
शो मुकुन्द ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रगर्ग श्री भगवान् विदुः स्मिर मा मे पवर्ण भया का य धि वि उधार ग न्या स्या यव
भया का य धि को जय ग न्या यस्ता पर मे स्वरु विरूप मुकुन्द को चर रा वारं वारं नम
र ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥पिप्यसायनले भंदा भया॥ हे श्रीरामनरसिंहरूप गहडवाहण गंडाधारि विद्यापति व
रि यस्मात्सुचतुवाक श्री कृष्ण सर्व को विष मारि गन्धी के शव हरि जगत् का सुख परत
स्वरकन नमस्कार॥

॥पिप्यसायन उवाच॥ श्रीमन्नुसिंहविभवे गडधजायता यत्र यो पश्यात् ॥ भवौ पक्षाय
॥ कृष्ण यदुश्चिकजलाग्निभुजङ्गु रोगके शय्यायाय हरये गुरुरेव नमस्त ॥ ५२॥ हविर्निवा
व ॥ कृष्णत्वदीयपदकपि मुरान्ते भयेव मेवि शतुमानसराजहंस ॥ पाशायाया लस
ये कफवातापित्तै कण्ठवरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥ ५३॥

॥५३॥ हविर्निवाते भदा भया ॥ हे कृष्णतिमिले वनया कोयोपि नर सुखे दिव्य मा
हंस वस्या मा कफवातापित्तले ज्वर भया सममावा स हतारि दाज्य भाते इति म
ले उधार गनु सजस कुदे न उधार गन्ती तया ई हो हे परम स्वर भगवार वार नम
र ॥ ५३॥

॥विदुरुले भंदा भया॥ हे परस्परतयाई का चरण मानम स्कारतयाई को चरण मां रे
सा छ अर्को को आसा छैनम करणतयाई को चरण को भक्त ले मोक्ष दिउ सुख दुख रा पुह
वसर॥५३॥ वसिष्ठ लेविति ग-या॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥विदुरु उवाच॥ हरेना मैवना मैवना मैम मजीवनम्॥ कलौ नास्ते वनस्तेवर्गा र-य
॥५४॥ वसिष्ठ उवाच॥ कस्येति मद्रु त नामयस्य वाचिप्रवर्तते॥ भस्मा भवानि
तस्या समज्ञायातक कोटय॥५५॥ अहध-त्यु उवाच॥ कस्या नुस्मरथा देवपापसं
दपंक जम्॥ शतधा भेदमाप्नोति गिरिवर्जं हतो यथा॥५६॥

जस्मनुष्यले मंगल वनयापनि श्री कृष्ण कोणा मस्मरना मंगल वना उद्ध त स्त्री पुप
स वै भस्म ऊछे॥५५॥ अहध-त्यु लेविति ग-या॥ हे कृष्ण भविना मलि-या कनपापस
वै कृति जोछ जस्मनुष्यले हरि कोणा मली-या कनपाप नास ऊछ जेहे वायु ले पर छ
त स्त्री पाप उरि जा छ हे कृष्ण तयाई कन-नम स्कार॥५६॥

॥ दुर्जोधन लेवित ग-या ॥ नून कर्म ले भा फु ले ग-यो ॥ उ ऊं छ ॥ धर्म ग-या धर्म फल हो सा
पाप ग-या पाप फल मि ल छ ॥ स्वरि परमेस्वर श्री कृष्ण ले सुष भोग दि न ॥ र ॥ श्री कृष्ण
न कून मरकार ॥ ५७ ॥ पुन वार ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दुर्जोधन उवाच ॥ जाना मि धर्म न च मे पु रानि जी ना मे धर्म न च मे नि दान ॥ के न
१२ पि देवो न हृदि स्थिते न यथानियुक्तो स्मितथा करोमि ॥ ५८ ॥ ये न म नून
वित पुरुषो ह्यनम ॥ अहं ये श्री भगवान् यं श्री मम दोषो यताम ॥ ५९ ॥ य
ह वा च ॥ नामैव त्वं च गोविन्द नाम त्वत्तः शताधिकम् ॥ ददा न्यु ॥
वान् शो ग योगत ॥ ५९ ॥

हे परमेस्वर कृष्ण तपाई को ग रा यो म ह ॥ म लाई दोष नाहि हे म ध ॥ ५९ ॥
पाप नि न ला या पाप न तपाई का च रौ मा दु तपाई क वार ॥ न
गु ले भ-या ॥ कोहि पु मा थि ले त त्व जानि कृ गोविन्द को नाम पा
१३ स य १०८ आथ आर्वत पाठ गरि ध्यान ग-या अथ अस य ज ग्ये ग

॥ पुनः वारं भंदा भया ॥ दिन प्रति नारायण को नाम निर्मल नाम मति नु रि
रायण को पावन को पावन मस्कार गङ्गा अविनाशि मंत्र ले जाये
न कले भंदा भया ॥ हरि को नासी न्या मनुष्य कनसमस्त कल्याण
ला आ फु आत्मा पर आत्मा वरोचि हा लो मनुष्या हरि को ले रे

॥ नमो मि नारायण पाद पै क करे मि नारायण पुजने सदा ॥ वदामि नारायण नमः
निर्मल स्मरामि नारायण तत्त्व मन्त्र यम ॥ ६० ॥ शौ न क उवाच ॥ त्वं त्वं
कल्याण भाजाने यत्र जायते ॥ पुरुष तं जे नि त्पु जा मि सरण हरि
उवाच ॥ नारायणोति मंत्रोस्ति वागस्ति वरा वर्तनी ॥ तथापि नर के मुखा प
लीयेत दु दु त म ॥ ६२ ॥ " " " " " " " " " " " "

॥ ६१ ॥ गगने विजिगर्दी भया ॥ कोहि मनुष्य रे वचन पिछे नारायण को नमः
अले जय न्य ई भक्त करान क जानु पदेन ॥ मंत्र न क न्या मनुष्य क
भनिका आश्चर्य ॥ ६२ ॥ " " " " " " " " " " " "

॥ दातु भेदे भद्रा भया ॥ जस्मनु व्यलेखि सुभाक्ति नगरि अह सर्व साध ना ग-याप
नि-क्या प्र योजन नद न मो नारायण ना त को वि सु को ज पुर सर्व साध क ऊं ह
अह मे त्र ज प-या ले क्या प्र योजन नद सा नि मनु व्य लेखि सु को भाक्ति ग नु ॥
॥ ६३ ॥ वैशं पा यण लेखि ति ग-या ॥ जा हा धर वा अर्जुन नद न ना हा श्री हृदय न व

॥ दातु भा उ वा च ॥ किं तस्य वरु भि मे त्रे भाक्ति यज नार्दन ॥ न मो नारायण
येति मे त्रः सर्वा थ साध क ॥ ६३ ॥ वैशं पा यण न उ वा च ॥ यत्र योगेश्वर रु
हो यत्र पाथो ध नुर्धर ॥ तत्र श्री विजयो मूर्ति कु वा नी नि मे ति मे म ॥ ६४ ॥
अंगिर उ वा च ॥ हा र्हा री न पा पा नि उ व चि ते र पि स्थ त ॥ अनि च यो पि स्थ
स्थ यो र ह त्पे र्कि पा व क ॥ ६५ ॥

सद न सद न जा हा क स व स द न ता हा स स्मी ज द त स
मा स्थि ति या ॥ ६४ ॥ अंगिर उ लेखि ति ग-या ॥ जस्मनु व्य ले खि सु र गी
को ना म ज प द उ को पा य स वे भ स्म ज द ॥ ६५ ॥

॥ परस्व लेखित ग-या ॥ जस्मनु व्यते भौरि सव्य गौरि तपस्त्रि का नाम दुई भस्वर हरि
भनि जप-या क्रु स-सार काथु सो नदि पार गौरि शुभ ते वै कुंठ जा छ ॥ ६६ ॥ पुनरु
लेखित ग-या ॥ हेजि भासदा काल मधुर वचन वो लज्जु दि चरे नऊ न सदा को ले
गो विन्द जपनु श्री नारायण को नाम ले मुक्त भै वै कुंठ वास मि हो ॥ ६७ ॥

॥ पराश उवाच ॥ सकुंडु चरित येन हरि रित्यक्षर हृदय म ॥ वहुं परि करत न मो
क्षाय मग न प्रीति ॥ ६८ ॥ पुनरु उवाच ॥ हेजि कर ससार जे सब दा मधुराये ये ॥
नारायण खपी सुषे विवजि के निस्त्र म ॥ ६९ ॥ पराश उवाच ॥ सत्य सत्य पुनः सत्य
सत्या वाग्नि इरो बुचीत ॥ नाति वेदा तो रेशोखं न देवः केशवात्य ॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥ व्यास ले आग्या गदी भषा ॥ विदुर वचन सत्य सत्य गौरि मान ॥ सोनि जन ले
विष्णु को भालि गनु विष्णु को रण म भया को शास्त्र पनु ॥ ७२ ॥ प्रात काल सापनि वि
ष्णु को ध्यान गनु ॥ ७३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ धनचतारिखेतिगदीभया ॥ हेअच्युअच्युतअनन्तगोविन्दतपाईका नामा ॥
कनधर्मकर्मतदा नतपत्या ॥ अहदेवताकोसेवातिथं जानुवर्देन श्री नारायण
को नाम सात्रसे धर्मकर्म औ वधिपनि विष्णुको नाम सिया पाछ पाप हरे गेसवे
कुति भै वै कुंठ वास होला ॥ ६९ ॥ साक दे ले भंदा भया ॥ ॥ ॥

॥ धनचतारिउवाच ॥ मअच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारण भेषजात ॥ नस्यनिस
कलरोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ७० ॥ साक एउ उवाच ॥ त्वमं दे मोक्ष दे हे वंशु
वदे जगतो गुरुम् ॥ कथं सुकृतं मेयितं वा मुदे वं न चितयेत् ॥ ७१ ॥ अगं राय
वाच ॥ नामि वं निमि पाछ वा प्राणा चित नम् ॥ कर्तु कोटि हस्या रं ध्या न मे कं
शिष्येते ॥ ७२ ॥ ॥

नमोस्तो गं मोक्ष सु पादि न्या जगत्का गुरु हरि को चित्त नान ग न्या लाई का गति
हो ला शानि गु से विष्णु को सेवा गर्नु ॥ ७३ ॥ अस्ते भंदा भया ॥ मत्स्य पु
सु को सु गार ध्या न गर्दे न उरु न को त जग न्या को पु न्य रु ॥ ७४ ॥

॥ ७ नवार अमल मुनि ले भंदा भया ॥ जाहा जाहा हरि कथा के दूत हा कुरुक्षेत्र ॥
गजमुना कसलावति सवैतिथ सर्व गंड कि केदार गया पु कुरनि तेति ॥
वता देवि गण निमि पोर न्य सवै आई कन हरि कथा सुनिरह छु न ॥

॥ मनसा कर्मणा वाचा ये स्मरति जनार्दनम् ॥ तत्र तत्र कुरुक्षेत्रं प्रयागं नैमिष वनम् ॥
॥ शुक्र उवाच ॥ आ लोका सर्व सास्त्राणि विचार्य च पुन ॥ इदमेकं समत्वं चोच्यते ॥
यत्न सदा ॥ ७३ ॥ श्री महादेव उवाच ॥ शरिरेर्जरी भुजे व्याधि ग्रस्ते क ते वदे ॥ औषधि
जाह्वितो ये वदो नारायणो हरि ॥ ७४ ॥

॥ ७२ ॥ शुक्र ले भंदा भया ॥ मैले समस्त सास्त्र ह्ये ॥ प्रणालु न्या विष्णु के च न जति थु
लोकि रह न छ तसर्थ ज्ञानि ले विष्णु को ध्यान गर्नु ॥ ७३ ॥ श्री महादेव ले आज्ञा ग हा भ
या ॥ जश्ने विष्णु को ध्यान गर्नु सक न्या क्रु उ को सति सदा स ॥ ७४ ॥
धिसवै जा छ व धै पनि विष्णु के रा ॥ ७४ ॥

॥ पुनवार आग्या गरी भया ॥ भोजन गरी मापनि विष्णु भवि अर्थ नन ग ॥ वा न्या मनुष्य को
जन्म र्थ हो हरि कथा कहं मा अकीति रचि न गरि राष न्या मनुष्य कन न न जो न
मनुष्य को जन्म भै कन आरि विष्णु को भगति गर्नु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ भोजने छाद ले चि ता रथा कुर्वन्ति वै ह्य वा ॥ यो सौर्विश्वं भरो देवः सखि नि मुपेक्ष्यते ॥
॥ ७५ ॥ एवं ब्रह्मा देवो देवाः स ष यश्च तपो धना ॥ कीर्त्तयन्ति सुरभ्यो वंदेव नारायणं वि
भुम् ॥ ७६ ॥ ॥

॥ ७५ ॥ पुनवार आग्या गरी भया ॥ तसर्थ श्री ब्रह्मा श्री महेश्वर देव सभ्य नरो धर्मात्मा ॥ १५
वि लोक ते ॥ परमे र श्री नारायण भगवान् कन भै गरि राष्या द ॥ ७६ ॥

॥ सनत्कुमार ले आशा गरी भया ॥ जहो शेष चक्र गदा पद्धारणा गरि गरुड वाहना
गरि वस्त्रा श्री लक्ष्मी ले सोभा भया कि श्री नारायण कन नमस्कार गरी पांडव भि
पाथ गन्या को देह पवित्र कंद आई वरि कंद वडो पुन्य हो ला धन धांभ्यं या शी
रनि मेरु न्या लोक ले मान्या संग्राम जि न्या साति गन्या अलु हो ॥ ॥ ॥

॥ सनत्कुमार उवाच ॥ यस्य हस्ते गदा चक्रं गरुडोऽप्यवाहनम् ॥ शेष चक्र गदा पद्धारणा
समे विष्णुः प्रसिदतु ॥ ७७ ॥ इदं पवित्र मातुष्य पुन्यं पाप प्रणाशनम् ॥ दुःस्वप्नो भ
ने स्तोत्रं पातु वै परिकीर्तनम् ॥ ७८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ७७ ॥ अस्यार्थ ॥ कोहि मनुष्य ले पात उधि सुचि भै श्री विष्णु को नमस्कार गरी
वगिता पाथ गरि ॥ कसे ले पाठ गन्या को सुनि रहे छ लेष त्या पुस्तक तु लाई घर
एष न्याई चारि जना लाई वरो वर पुरण छ ॥ ७८ ॥

अस्यार्थ ॥ यत्तु पुण्यत्वे ह्यारगौ दान ग-या को पुण्य ऊं छ ह्यारति ह्यारगना ग-या को
पुन्य पुण्य ऊं छ मु गभ भरिसरा सर्वदा सदा वर्त ग-या को पुण्य छ नपाय ह्यार छ ॥ ७९ ॥
लोक जा छ न ॥ ७९ ॥

॥ य पठे पृथक्त्वा य वै ह्यवस्तो व्रमन्त म ॥ सर्व पाप विनिमुक्तो विमुक्तो भविष्यति ॥
त ॥ ७९ ॥ गी तो गंगा च गा य श्री गोविन्दो गह्वर ध्वजः चतुर्गकारो गुरुः सुपुनः न
न विद्यते ॥ ८० ॥

॥ अस्यार्थ ॥ जशो पाठ वगिता पाठ गरिभक्त ग छ तरको सै पुन्य ऊं छ ह्यारगना ग-या को
तस्य सार्थ पाप सर्व मो च गरि केरि केरि मानि स भै जन्म ऊं नु पदै न सत्य सत्य वै ॥ ८० ॥
छ न ॥ ८० ॥

मन्त्रवागीश्वर/२५

१७

स्वस्ति श्री गने प्राय

स्वस्ति

स्वस्ति श्री सवा

श्री गणेश

आ

स्वस्ति श्री गने प्राय नम

स्वस्ति

स्वस्ति श्री सवर्ष धामाध

आशा मन्त्रवागीश्वर
2441
ASHA ARCHIVES